खण्ड–5, अंक–1, वर्ष–2017, मु0पृ0 100–102, D.O.I. : 10.22445/avsp.v5i01.9857 समीक्षा एवं तकनीकी आलेख

एलोवेरा एवं उसके औषधीय गुण–वैज्ञानिक अवलोकन

पल्लवी दीक्षित
असिस्टेंट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग
महिला विद्यालय डिग्री कॉलेज, लखनऊ–226018, उ0प्र0, भारत
drpallavidixit80@gmail.com

प्राप्त तिथि– 30.06.2017, स्वीकृत तिथि–26.08.2017

सार– प्राचीन काल से ही एलोवेरा का प्रयोग न केवल विभिन्न रोगों के उपचार में वरन् सौन्दर्य प्रसाधन के रूप में किया जाता रहा है। इसके रस में अनेक प्रकार के मिनरल्स, विटामिन्स, प्रोटीन आदि पाये जाते हैं। इसे औषधि की दुनिया की संजीवनी भी कहा जाता है। इसका प्रयोग मधुमेह, तनाव, जोड़ों के दर्द, पाचनतन्त्र की गड़बड़ी, अल्सर विभिन्न त्वचा सम्बन्धी रोगों, रोक प्रतिरोधक क्षमता के विकास में तथा सौन्दर्य प्रसाधन के रूप में किया जाता है। वर्तमान समय में एलोवेरा का प्रयोग पारम्परिक चिकित्सा के क्षेत्र में न केवल भारत में वरन् अनेक देशों में किया जा रहा है। एलोवेरा के अन्य लाभप्रद गुणों को जानने हेतु पर्याप्त शोध की आवश्यकता तथा इसके अधिकाधिक उत्पादन हेतु उन्नत तकनीकों व उनके विस्तार की आवश्यकता है, जिससे प्रकृति के द्वारा प्रदत्त इस वरदान से मानव जाति और अधिक लाभान्वित हो सके।

बीज शब्द– एलोवेरा, औषधीय गुण।

Aloe vera and its medicinal properties-scientific overview

Pallavi Dixit
Assistant Professor, Department of Botany
Mahila Vidyalaya Degree College, Lucknow-226018, UP, India
drpallavidixit80@gmail.com

Abstract- Aloe vera has been used by mankind since long in folk medicines for therapeutic properties especially for skin. The Greek philosopher Aristotle wrote about the beneficial medicinal effects of Aloe vera, while references are also found throughout bible. Aloe vera is well known for its medicinal and cosmetic properties. It is used as medicines not only in India but also throughout the world. It contains vitamins, minerals, amino acids, enzymes, polysaccharides and other bioactive compounds. Further researches are needed for its systematic cultivation, product formulations and to popularize its more beneficial effects among masses.

Key words- Aloe vera, medicinal properties.

1. **प्रस्तावना–** एलोवेरा को घृतकुमारी, क्वारगंदल या ग्वारपाठा के नाम से भी जाना जाता है। यह मूलतः उत्तरी अफ्रीका का पौधा है तथा मुख्यतः कैनेरी द्वीप माडियरा द्वीपों, अल्जीरिया, मोरक्को, ट्यूनीशिया से सम्बन्धित है। हालांकि अब यह पूरे विश्व में उगाया जाता है। एलोवेरा का पौधा औषधीय गुणों से परिपूर्ण होता है। एलोवेरा का पौधा छोटा, कंटीला बिना तने का गूदेदार 60–100 से०मी० तक का होता है। इसकी पत्तियाँ भालाकार, मोटी, मांसल, हरी या हरी स्लेटी होती हैं। गर्मी के मौसम में इसमें पीले रंग के फूल उत्पन्न होते हैं। इसकी पत्तियों में तरल पदार्थ भरा रहता है जिसमें अनेक प्रकार के विटामिन, अमीनो अम्ल, एण्टीऑक्सीडेंट्स, मिनरल पाये जाते हैं। एलोवेरा का प्रयोग पारम्परिक चिकित्सा के क्षेत्र में तथा सौन्दर्य प्रसाधन के रुप में प्राचीन काल से ही किया जा रहा है। ग्रीक फिलॉसफर एरिस्टोटिल ने भी एलोवेरा के औषधीय गुणों का वर्णन किया था तथा इसका उल्लेख बाइबिल में भी मिलता है।[1] आदिकाल में इस पौधे की उत्पत्ति चीन में मानी जाती हे जिसे अंतराल में सत्रहवीं सदी में दक्षिणी यूरोप के विभिन्न देशों में विस्तारित किया गया तथा उन्नीसवीं शताब्दी में एलो वेरा को विश्व में प्रमुख औषधि की मान्यता प्राप्त हुई। सामान्यतः एलो वेरा की 13 प्रजातियां एशिया में पाई जाती हैं। भारत में दो प्रकार के एलो वेरा उपलब्ध हैं– हरित वर्णी तथा नील वर्णी। इनकी मांसल पत्तियाँ मरूस्थल एवं शुष्क वातावरण में भी जल संचयन की क्षमता रखते हैं। एलोवेरा शब्द की उत्पत्ति अरबी शब्द 'एलोह' से हुई है जिसका तात्पर्य है 'चमकदार' कड़वा पदार्थ क्योंकि इसकी पत्तियों में कड़वा पदार्थ पाया जाता है तथा 'वेरा' शब्द का तात्पर्य है, ट्रू जो कि एक लेटिन शब्द है।[1,2] मिश्र देशवासियों ने इसे अविनाशी पौधा कहा है।

2. **वैज्ञानिक वर्गीकरण**– जगत–पादप, संवर्ग–*मैग्नोलिओफाइटा,* वर्ग–*लिलिओप्सिडा,* गण–*एस्पैरागलेस,* कुल–एलोएसी, वंश–*एलो,* जाति–*वेरा*।

सारिणी–1: एलो वेरा में उपस्थित अवयव

ग्लाइकोप्रोटीन	एन्थ्राक्वीनोन्स	सैकेराइड्स	विटामिन्स	एंजाइम	लो–मॉलीकुलर वेट सेक्मटेन्सेज
	एलोए–इमोडिन एलोएटिक एसिड एलोइन एन्थ्रानोल, वारवेलोइन आरसोवरवालोइन, इमोडिन इस्टरऑफसिनेमिक–एसिड	सैल्यूलोज, ग्लूकोज, मेनोज, एल्डोपेन्टोज एसीटाईलेटेड मेनान (एसीमेनान) ग्लूकोमेनान एसीटाईलेटेड ग्लाइकोमेनान ग्लेक्टोगे लेक्टूरॉन ग्लूकोगेलेक्टोमेनान गेलेक्टोग्लूकोएराबिनो–मेनान	बी1 बी2 बी6 सी बी–केरोटीन कोलिन फॉलिक एसिड एल्फा–टोको–फीरोल	एमाइलेज कार्बोमनी–पे पेप्टीडेज केटालेज लाइपेज ऑक्सीडेज	एराकिडोनिक एसिड कोलेस्ट्रोल जिब्रेरेलिन लेक्टिन–लाइक सब्सटेन्सेज सेलीसाइक्लिक एसिड बीटा–सीटोस्टीरॉल स्टीराइड टाईग्लाईसीराइड्स यूरिक एसिड

सन्दर्भ [3] से साभार

3. **चिकित्सीय गुण–** अपने विशिष्ट औषधीय गुणों के कारण एलोवेरा का प्रयोग न केवल सौन्दर्यवर्धन हेतु वरन् विभिन्न रोगों जैसे–हृदय रोग, मधुमेह, अर्थराइटिस, तनाव, त्वचा सम्बन्धी रोग आदि के उपचार में किया जाता है। एलोवेरा के कुछ प्रमुख औषधीय गुण निम्नलिखित हैं–

1. **हृदय रोग**– एलोवेरा रक्तचाप तथा हृदय की समस्यायों के निदान में लाभप्रद है। यह हृदय गति को संतुलित कर हृदय के स्पंदन की शक्ति को बढ़ाता है।[4] यह हृदय के स्नायु तंत्र को मजबूत करता है। यह कार्बोहाइड्रेट व वसा का सुयोग्य पाचन कर इनके संचय को रोकता है।

2. **मधुमेह**– एलोवेरा में कुछ अकार्बनिक तत्व(केनेडियम, मैगेनीज, कॉपर)[5] तथा पॉलीसेकेराइड्स पाये जाते हैं जो मधुमेह को नियन्त्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एलोवेरा इंसुलिन के निर्माण को नियन्त्रित करके अग्नाशय, यकृत व वृक्क को नुकसान होने से बचाता है।

3. **पाचन तन्त्र–** एलोवरा का रस पाचन जटिलताओं व विषाक्त पदार्थों से आंत्र पथ को शुद्ध करता है। यह आवश्यक खनिज व पोषक तत्वों के बेहतर अवशोषण में सहायता करता है व कब्ज से राहत देता है। इसके सेवन से अपच, कब्ज, डायरिया जैसी समस्यायें समाप्त होती हैं व पेट के अल्सर की समस्या भी दूर होती है।[1,2]

4. **तनाव–** शरीर को तनाव रहित बनाने में तथा तनाव की वजह से कोशिकाओं को होने वाले नुकसान को कम करने में एलोवेरा लाभप्रद है।[6]

5. **एन्टीसेप्टिक गुण**– एलोवेरा का एन्टीसेप्टिक गुण उसमें पाये जाने वाले छः एंटीसेप्टिक अभिकरणों की वजह से होता है यथा लूपीओर, सेलीसालिड एसिड, यूरिया नाइट्रोजन, सिनेमोइक एसिड, फीनोल्स एवं सल्फर। ये कम्पाउण्ड बैक्टीरियल तथा वायरल संक्रमण से रोकथाम में उपयोगी है।[7]

6. **जोड़ों के दर्द व आर्थराइटिस में**– आर्थराइटिस के कारण शरीर के जोड़ों व मांसपेसियों में होने वाले दर्द के उपचार में एलोवेरा जेल व स्प्रे अत्यन्त लाभप्रद होता है।[8]

7. **हीलिंग गुण**– एंटीवैक्टीरियल एवं एंटीफंगल गुणों के कारण एलोवेरा घाव को जल्दी भरता है। जलने या चोट लगने पर उक्त स्थान पर एलोवेरा जेल लगाने पर छाले नहीं पड़ते हैं व जलन भी कम हो जाती है।[9] एलोवेरा सोरायसिस में भी प्रभावी है तथा घाव भरने में यह सामयिक एजेंट की भांति कार्य करता है।

8. **एंटीबैक्टीरियल व एंटी वायरल गुण–** अनेक शोधों से यह प्रमाणित किया जा चुका है कि एलोवेरा में एंटीबैक्टीरियल व एंटीवायरल गुण विद्यमान होते हैं। सूक्ष्मजीवी जैसे– पिओजीन्स, शिजीला फ्लेकनेरी, क्लोब्सीइल्स स्पीसीज व विशेषतया ग्राम पॉजीटिव बैक्टीरिया जो कि फूड प्वाइजनिंग के लिए उत्तरदायी होते हैं उनकी वृद्धि को एलोवेरा रोकता है।[10]

9. **वजन नियन्त्रण में सहायक**– एलोवेरा जूस का नियमित सेवन वजन नियन्त्रित करने तथा ऊर्जा स्तर को बढ़ाने में अत्यन्त लाभप्रद है।[9] एलोवेरा का जूस शरीर के उपापचय दर को स्थिर कर वसा के स्तर को कम करके वजन को नियन्त्रित करता है।[11]

10. **दाँतों व मसूड़ों के लिए लाभप्रद– ए**लोवेरा दाँतों तथा मसूड़ों के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। इसके सेवन से मसूड़ों की तकलीफ, सूजन, खून आना बन्द होता है साथ ही मुँह के अल्सर का रोग भी ठीक हो जाता है।[9]

11. **एंटीएजिंग व त्वचा की नमी बनाये रखने में लाभप्रद– ए**लोवेरा में पाये जाने वाले म्यूको–पॉलीसेकेराइड्स त्वचा को नर्म व मुलायम बनाते हैं। इसमें निहित अमीनो एसिड्स रूखी त्वचा को मुलायम बनाते हैं तथा जिंक त्वचा में कसाव लाता है। एलोवेरा एक्ने, झाइयाँ, त्वचा के दाग धब्बों को दूर कर त्वचा के सौंदर्य को बढ़ाता है।[12] एलोवेरा जेल एक कूलिंग एवं माइस्च्यूराइजिंग एजेंट की तरह कार्य करता है इसका प्रयोग स्किन टॉनिक की तरह कॉस्मेटिक इंडस्ट्रीज में किया जाता है। एलो वेरा में उपस्थित एण्टीऑक्सिडेंट्स त्वचा को कांतिमय बनाने व बढ़ती उम्र के प्रभाव को रोकने में भी अत्यन्त लाभप्रद है।

12. **अन्य गुण**– बोग्लर व इर्नेस्ट[13] ने यह पाया कि एलोवेरा त्वचा के चकत्ते, कीट दंश, योनि संक्रमण, कंजक्टीवाइटिस एवं एलर्जी में भी अत्यन्त लाभप्रद है।

4. **निष्कर्ष**– प्राचीन काल से एलोवेरा का प्रयोग न केवल विभिन्न रोगों के उपचार में वरन् सौन्दर्य प्रसाधन के रूप में किया जाता रहा है। एलोवेरा मनुष्य को प्रकृति की एक महत्वपूर्ण देन है। इसमें कई प्रकार के प्रोटीन, विटामिन्स, मिनरल्स पाये जाते हैं। इसी कारण से इसे औषधि की दुनियाँ की संजीवनी भी कहा जाता है। वर्तमान समय एलोवेरा के और अधिक लाभप्रद औषधीय गुणों को जानने हेतु न केवल पर्याप्त शोध की आवश्यकता है वरन् इसके अधिक उत्पादन हेतु सही उत्पादन तकनीकों की जानकारी व उनके विस्तार की भी आवश्यकता है, जिससे कि प्रकृति के इस वरदान से मानव जाति और अधिक लाभान्वित हो सके।

सन्दर्भ

1. राजेश्वरी, आर0; उमादेवी, एम०; शर्मिला, सी0; रहाले, आर०; पुष्पा, एस०; सेल्वावेन्कदेश, के० पी०; कुमार, सम्पत एवं भौमिक, देबजित(2012) एलोवेराः दि मिरेकिल प्लान्ट इट्स मेडीसिनल एंड ट्रेडीशनल यूजेज इन इंडिया, जर्नल ऑफ फार्मकोग्नोसी एण्ड फाइटोकैमिस्ट्री, खण्ड–1, अंक–4, मु0पृ0 119–126।
2. सरोज, पी० एल०; धनदार, डी०जी० एवं सिंह, आर० एस0(2004) इंडियन एलोवेरा, सेन्ट्रल इन्स्टीट्यूट फॉर एरिड हॉर्टीकल्चर, बीकानेर, राज0।
3. कोई, एस0 एवं चुग, एम० एच0(2003) ए रिव्यू ऑफ **द रिलेशन**शिप बिटवीन एलोवेरा कम्पोनेन्ट एंड देयर बायोलॉजिकल इफेक्ट्स, सेमिन, इन इन्टीग्रेटिव मेडिसिन, खण्ड–1, मु0पृ0 53–62।
4–एचटीटीपीः//पावरोफेलोइवर्डप्रेस.कॉम/2011/07/12 बेनेफिट्स ऑफ एलोवेरा।
5–राजेन्द्रन, ए०; नारायन, वी0 एवं ग्नानावेल, आई0(2007) स्टडी ऑन द एनालिसिस ऑफ ट्रेस एलीमेन्ट्स इन एलोवेरा एण्ड इट्स बॉयोलॉजिकल इम्पोरटेन्स, ज० ऑफ एपलाइड साइंस रिसर्च, खण्ड–3, मु0पृ0 1467–1478।
6. फॉस्टर, एस०(1990) "एलोवेरा", द कूलेन्ट विद स्किन सूदिंग सैल प्रोटेक्टिंग प्रोपर्टीज, हर्व फॉर हेल्प मैग्नीज।
7. चौरसिया, ए० के०; दुबे, एस० एवं ओझा, जे० के(1994) रोल ऑफ विजयसारा एण्ड जारूल ऑन इंसुलिन डीपेन्डेन्ट, डाइबिटीज मिलिट्स, आरया वाईदयान, वॉल्यूम–7, न० 3, 1994, मु0पृ0 147–152।
8–करकालामाननविथा, भूषण विद्या(2014) एलोवेराः ए वन्डर प्लांट इट्स हिस्ट्री, कल्टीवेशन एंड फाइटोकेमिस्ट्री, खण्ड–2, अंक–5, मु0पृ0 85–88।
9–एम० ओनली माई हेल्थ.कॉम/हिन्दी एचटीएमएल।
10–एलेमदार, एस० एवं एगोओग्लन, एस0(2009) इनवेस्टीगेशन ऑफ इनविट्रो एंटीमाइक्रोबियल एक्टीविटी ऑफ एलोवेरा जूस, जर्नल ऑफ एनीमल एण्ड वैटेनरी एडवांसेज, खण्ड–8, मु0पृ0 99–102।
11. एचटीटीपीः//खूबसूरती.कॉम/31–एलोवेरा यूजेज एंड बेनीफिट्स।
12. वेस्ट, डी० पी0 एवं झू, वाई० एफ०(2003) इवेलूएशन ऑफ एलोवेरा जेल ग्लोवस इन द ट्रीटमेन्ट ऑफ ड्राई स्किन एसोशिएशन विद ऑकूपेशनल एक्पोजर, खण्ड–31, अंक–1, अमेरिकन जर्नल ऑफ इन्फेक्शन कंट्रोल, 2003 मु0पृ0 40–42।
13–बोग्लर, वी० के0 एवं अरनेस्ट, ई०(1999) एलोवेराः ए सिस्टेमेटिक रिव्यू ऑफ इट्स क्लीनिकल इफेक्टिवनेस, ब्रिटिश जनरल ऑफ जनरल प्रेक्टिस, खण्ड–49, मु0पृ0 823–828।